© June 2026 | IJIRT | Volume 13 Issue 1 | ISSN: 2349-6002

नारी चेतना और यथार्थ का संगम: ममता कालिया के कथा साहित्य का एक विश्लेषण

नीतेश सिंह[1], प्रो. (डॉ.) पूजा जोरासिया[2]
[1] शोधार्थी, कला एवं मानविकी संकाय, कैरियर प्वाइंट विश्वविद्यालय, कोटा
[2] शोध पर्यवेक्षक, कला एवं मानविकी संकाय, कैरियर प्वाइंट विश्वविद्यालय, कोटा

***सारांश*—हिंदी कथा साहित्य में ममता कालिया का नाम उन प्रमुख साहित्यकारों में लिया जाता है जिन्होंने स्त्री जीवन के विविध आयामों को अत्यंत सहज, व्यावहारिक तथा यथार्थपरक दृष्टि से अभिव्यक्त किया। उनका कथा साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि समकालीन समाज की सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विसंगतियों का सशक्त दस्तावेज भी है। ममता कालिया ने अपने उपन्यासों और कहानियों में विशेष रूप से मध्यवर्गीय स्त्री के जीवन-संघर्ष, मानसिक द्वंद्व, पारिवारिक दायित्वों, सामाजिक अपेक्षाओं तथा आत्मसम्मान के प्रश्नों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य में नारी चेतना केवल भावनात्मक संवेदनाओं तक सीमित नहीं रहती, बल्कि वह स्त्री के आत्मबोध, आत्मनिर्भरता, स्वतंत्र अस्तित्व और सामाजिक पहचान के प्रश्नों से गहराई से जुड़ जाती है।**

ममता कालिया की रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता उनका यथार्थ बोध है। उन्होंने जीवन की वास्तविक परिस्थितियों को बिना किसी कृत्रिम आदर्शवाद के चित्रित किया है। उनके साहित्य में स्त्री न तो केवल त्याग और सहनशीलता की प्रतिमा है और न ही केवल विद्रोह का प्रतीक, बल्कि वह एक संवेदनशील, संघर्षशील और जागरूक व्यक्तित्व के रूप में सामने आती है। वे आधुनिक स्त्री के उस रूप को प्रस्तुत करती हैं जो परिवार और समाज के बीच संतुलन स्थापित करते हुए अपनी स्वतंत्र पहचान बनाए रखने का प्रयास करती है। उनकी कहानियों और उपन्यासों में दांपत्य संबंधों की जटिलताएँ, आर्थिक दबाव, सामाजिक रूढ़ियाँ, कार्यस्थल की चुनौतियाँ तथा बदलते पारिवारिक मूल्यों का अत्यंत सजीव चित्रण मिलता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में ममता कालिया के कथा साहित्य का नारी चेतना और सामाजिक यथार्थ के संदर्भ में विश्लेषण किया गया है। इसमें उनके प्रमुख उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि उन्होंने किस प्रकार स्त्री जीवन के संघर्षों, आकांक्षाओं और अस्तित्व संबंधी प्रश्नों को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान की। साथ ही उनके साहित्य में प्रयुक्त भाषा-शैली, व्यंग्यात्मक दृष्टि, संवादधर्मिता तथा मध्यवर्गीय जीवन के चित्रण का भी अध्ययन किया गया है। यह शोध-पत्र इस तथ्य को रेखांकित करता है कि ममता कालिया का कथा साहित्य हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श को नई दिशा प्रदान करता है तथा समकालीन समाज में स्त्री की बदलती स्थिति को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम बनता है।

***मुख्य शब्द*— नारी चेतना, यथार्थवाद, ममता कालिया, कथा साहित्य, स्त्री विमर्श, मध्यवर्गीय जीवन, सामाजिक यथार्थ, महिला लेखन**

I. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श ने बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में एक महत्वपूर्ण साहित्यिक आंदोलन का रूप ग्रहण किया। इस आंदोलन ने साहित्य को नई दृष्टि प्रदान करते हुए स्त्री के जीवन, उसकी सामाजिक स्थिति, उसके अधिकारों, स्वतंत्रता तथा अस्तित्व संबंधी प्रश्नों को केंद्र में स्थापित किया। लंबे समय तक भारतीय समाज में स्त्री को परंपरागत भूमिकाओं तक सीमित रखा गया, जहाँ उसका व्यक्तित्व परिवार और सामाजिक मर्यादाओं के भीतर ही परिभाषित किया जाता था। आधुनिक शिक्षा, औद्योगीकरण, शहरीकरण तथा सामाजिक जागरूकता के प्रभाव से स्त्री के भीतर आत्मचेतना का विकास हुआ और उसने अपने अस्तित्व तथा अधिकारों के प्रति सजग होकर आवाज उठानी प्रारंभ की। इस परिवर्तनशील चेतना को साहित्य ने प्रभावशाली अभिव्यक्ति प्रदान की। हिंदी की अनेक महिला साहित्यकारों ने अपने लेखन के माध्यम से स्त्री जीवन की पीड़ा, संघर्ष, संवेदनाओं तथा आकांक्षाओं को नई दृष्टि से प्रस्तुत किया। ममता कालिया इसी परंपरा की एक सशक्त, प्रखर और यथार्थवादी कथाकार हैं।

ममता कालिया का कथा साहित्य समकालीन समाज और मध्यवर्गीय जीवन की वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में विशेष रूप से उस स्त्री को केंद्र में रखा है जो पारिवारिक दायित्वों,

सामाजिक अपेक्षाओं, आर्थिक दबावों और व्यक्तिगत आकांक्षाओं के बीच निरंतर संघर्ष करती है। उनके साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें जीवन का कृत्रिम आदर्शवाद नहीं, बल्कि वास्तविक अनुभवों की सजीवता दिखाई देती है। उनके पात्र सामान्य जीवन से जुड़े हुए हैं और उनकी समस्याएँ भी समाज की वास्तविक समस्याएँ हैं। यही कारण है कि पाठक उनके साहित्य से सहज रूप से जुड़ता है।

ममता कालिया ने स्त्री को केवल त्याग, सहनशीलता और समर्पण की प्रतिमा के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसे एक जागरूक, विचारशील और आत्मसम्मानपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया है। उनकी स्त्रियाँ परिस्थितियों से समझौता तो करती हैं, किंतु अपनी अस्मिता और स्वतंत्र पहचान को समाप्त नहीं होने देतीं। वे सामाजिक रूढ़ियों, पुरुषवादी मानसिकता तथा पारिवारिक असमानताओं के विरुद्ध प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संघर्ष करती दिखाई देती हैं। उनके साहित्य में स्त्री केवल भावुकता का प्रतीक नहीं है, बल्कि वह अपने अधिकारों और अस्तित्व के प्रति सजग आधुनिक व्यक्तित्व के रूप में सामने आती है।

उनकी कहानियों और उपन्यासों में घरेलू जीवन, दांपत्य संबंधों की जटिलताएँ, आर्थिक असुरक्षा, नौकरीपेशा स्त्रियों की समस्याएँ, सामाजिक दबाव तथा बदलते पारिवारिक मूल्यों का अत्यंत यथार्थवादी चित्रण मिलता है। वे मध्यवर्गीय समाज की उन विडंबनाओं को उजागर करती हैं जिनमें स्त्री को एक साथ अनेक भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं। इसके साथ ही ममता कालिया ने आधुनिक जीवन की भागदौड़, उपभोक्तावादी संस्कृति और मानवीय संबंधों में बढ़ती दूरी को भी अपने साहित्य का विषय बनाया है।

प्रस्तुत शोध-पत्र में ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना और यथार्थ के विविध पक्षों का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि ममता कालिया ने किस प्रकार अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री जीवन की वास्तविक समस्याओं, उसके संघर्षों, उसकी चेतना और उसकी स्वतंत्र पहचान को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान की। साथ ही उनके कथा साहित्य की भाषा, शैली, व्यंग्यात्मक दृष्टि और सामाजिक सरोकारों का भी सम्यक अध्ययन किया गया है। यह शोध न केवल ममता कालिया के साहित्यिक योगदान को रेखांकित करता है, बल्कि समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श की प्रासंगिकता को भी स्पष्ट करता है।

II. ममता कालिया: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

ममता कालिया हिंदी साहित्य की उन महत्वपूर्ण साहित्यकारों में हैं जिन्होंने समकालीन कथा साहित्य को नई दृष्टि और नई संवेदनशीलता प्रदान की। उनका जन्म 2 नवंबर 1940 को उत्तर प्रदेश के वृंदावन में हुआ। प्रारंभ से ही साहित्यिक वातावरण और अध्ययनशील प्रवृत्ति के कारण उनका रुझान लेखन की ओर रहा। उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद अध्यापन कार्य से भी जुड़कर साहित्य और समाज दोनों क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभाई। ममता कालिया ने हिंदी कथा साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान एक ऐसी लेखिका के रूप में बनाई, जिन्होंने जीवन की वास्तविक परिस्थितियों को बिना किसी बनावटी आदर्शवाद के अत्यंत सहज और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया।

ममता कालिया बहुमुखी प्रतिभा की धनी एक साहित्यकार हैं। उन्होंने कहानी, उपन्यास, कविता, संस्मरण तथा नाटक जैसी विभिन्न साहित्यिक विधाओं में लेखन किया। किंतु उन्हें विशेष ख्याति कथाकार और उपन्यासकार के रूप में प्राप्त हुई। उनका साहित्य मुख्यतः मध्यवर्गीय जीवन, स्त्री संघर्ष, सामाजिक विसंगतियों तथा बदलते पारिवारिक मूल्यों पर केंद्रित है। उन्होंने अपने साहित्य में विशेष रूप से उस स्त्री की स्थिति को चित्रित किया है जो आधुनिक समाज में परिवार, नौकरी, सामाजिक अपेक्षाओं और व्यक्तिगत आकांक्षाओं के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है।

उनकी प्रमुख कृतियों में 'बेघर', 'नरक दर नरक', 'दौड़', 'एक पत्नी के नोट्स', 'लड़कियाँ', 'छुटकारा', 'जाँच अभी जारी है' आदि उल्लेखनीय हैं। इन रचनाओं में उन्होंने स्त्री जीवन की समस्याओं, उसकी मानसिक पीड़ा, सामाजिक संघर्ष तथा आत्मसम्मान की भावना को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। 'एक पत्नी के नोट्स' में दांपत्य जीवन की जटिलताओं का यथार्थवादी चित्रण मिलता है, जबकि 'बेघर' में स्त्री के अस्तित्व और असुरक्षा की समस्या को प्रमुखता दी गई है। इसी प्रकार 'दौड़' आधुनिक जीवन की भागदौड़ और उपभोक्तावादी संस्कृति की विडंबनाओं को उजागर करता है।

ममता कालिया की लेखन शैली अत्यंत सरल, सहज और संवादप्रधान है। उन्होंने साहित्यिक भाषा के कृत्रिम आडंबर से बचते हुए बोलचाल की भाषा का प्रभावी प्रयोग किया है। यही कारण है कि उनका साहित्य पाठकों के जीवन के अत्यंत निकट प्रतीत होता है। उनकी भाषा में व्यंग्य, संवेदना और यथार्थ का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। वे छोटी-छोटी

घटनाओं और सामान्य अनुभवों के माध्यम से समाज की बड़ी सच्चाइयों को उजागर करती हैं।

उनकी रचनाओं में व्यंग्य केवल हास्य उत्पन्न करने के लिए नहीं है, बल्कि सामाजिक विसंगतियों और पुरुषवादी मानसिकता पर प्रहार करने का माध्यम भी है। उन्होंने स्त्री को केवल भावुक और सहनशील पात्र के रूप में प्रस्तुत नहीं किया, बल्कि उसे जागरूक, आत्मनिर्भर और संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में चित्रित किया है। उनके पात्र वास्तविक जीवन से जुड़े हुए हैं, इसलिए पाठक उनके साहित्य में अपने जीवन और समाज की झलक अनुभव करता है।

ममता कालिया का साहित्य समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श को नई दिशा प्रदान करता है। उन्होंने स्त्री जीवन के उन पक्षों को अभिव्यक्ति दी जिन्हें लंबे समय तक साहित्य में पर्याप्त महत्व नहीं दिया गया था। उनकी रचनाएँ केवल साहित्यिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि सामाजिक चेतना और यथार्थ बोध की दृष्टि से भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। इस प्रकार ममता कालिया हिंदी साहित्य की एक सशक्त, संवेदनशील और यथार्थवादी लेखिका के रूप में स्थापित होती हैं।

III. नारी चेतना की अवधारणा

नारी चेतना का आशय केवल स्त्री अधिकारों की मांग या पुरुष-विरोध तक सीमित नहीं है, बल्कि यह स्त्री के आत्मबोध, आत्मसम्मान, स्वतंत्र अस्तित्व तथा व्यक्तित्व की पहचान से जुड़ी व्यापक अवधारणा है। यह चेतना स्त्री को अपने अधिकारों, कर्तव्यों और सामाजिक स्थिति के प्रति जागरूक बनाती है तथा उसे परंपरागत बंधनों, रूढ़ियों और असमानताओं के विरुद्ध सोचने और संघर्ष करने की प्रेरणा देती है। नारी चेतना स्त्री को केवल परिवार की सीमाओं में बंधे रहने के बजाय समाज में एक स्वतंत्र और समान नागरिक के रूप में स्थापित करने का प्रयास करती है। इसका मुख्य उद्देश्य स्त्री को उसकी वास्तविक पहचान दिलाना तथा उसके व्यक्तित्व के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करना है।

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही स्त्री की स्थिति अनेक सामाजिक और सांस्कृतिक बंधनों से प्रभावित रही है। पुरुष-प्रधान व्यवस्था ने स्त्री को लंबे समय तक घर और परिवार तक सीमित रखा। उसे त्याग, सहनशीलता और समर्पण की प्रतिमूर्ति मानते हुए उसकी स्वतंत्र इच्छाओं और आकांक्षाओं को पर्याप्त महत्व नहीं दिया गया। सामाजिक मर्यादाओं, धार्मिक मान्यताओं तथा रूढ़िगत परंपराओं ने स्त्री की स्वतंत्रता को सीमित किया। शिक्षा, संपत्ति, निर्णय लेने की स्वतंत्रता तथा सामाजिक सहभागिता जैसे अधिकारों से भी उसे लंबे समय तक वंचित रखा गया।

आधुनिक काल में शिक्षा के प्रसार, औद्योगीकरण, शहरीकरण, सामाजिक सुधार आंदोलनों तथा आर्थिक स्वतंत्रता के कारण स्त्री की स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। स्त्रियों ने अपने अधिकारों, समानता और स्वतंत्र पहचान के प्रति जागरूक होना प्रारंभ किया। इसी जागरूकता ने नारी चेतना को जन्म दिया। साहित्य, पत्रकारिता और सामाजिक आंदोलनों ने इस चेतना को व्यापक स्तर पर अभिव्यक्ति प्रदान की। हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के माध्यम से महिला लेखिकाओं ने स्त्री जीवन की समस्याओं, संघर्षों, पीड़ा और आकांक्षाओं को प्रमुखता से प्रस्तुत किया।

ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना अत्यंत व्यावहारिक, संतुलित और जीवन-सापेक्ष रूप में दिखाई देती है। उनकी स्त्रियाँ केवल विद्रोह का प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे परिस्थितियों का साहसपूर्वक सामना करते हुए अपने अस्तित्व और आत्मसम्मान की रक्षा करती हैं। वे परिवार और समाज के बीच संतुलन बनाए रखते हुए अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करने का प्रयास करती हैं। ममता कालिया की स्त्रियाँ आधुनिक शिक्षित मध्यवर्गीय समाज का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो आर्थिक, सामाजिक और मानसिक स्तर पर अनेक संघर्षों से गुजरती हैं।

उनकी रचनाओं में स्त्री अपनी समस्याओं को समझती है, उनका विश्लेषण करती है और उनसे निकलने का मार्ग खोजने का प्रयास करती है। वे अपने अधिकारों, सम्मान और आत्मनिर्भरता के प्रति सजग रहती हैं। ममता कालिया ने नारी चेतना को केवल सैद्धांतिक रूप में नहीं, बल्कि दैनिक जीवन की वास्तविक परिस्थितियों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि उनका साहित्य पाठकों को समाज और स्त्री जीवन की वास्तविकताओं से गहराई से परिचित कराता है। इस प्रकार ममता कालिया का कथा साहित्य नारी चेतना की आधुनिक और यथार्थवादी अभिव्यक्ति का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है।

IV. ममता कालिया के कथा साहित्य में यथार्थ बोध

ममता कालिया का कथा साहित्य सामाजिक यथार्थ का सशक्त और प्रभावशाली प्रतिनिधित्व करता है। उन्होंने अपने साहित्य में जीवन की वास्तविक परिस्थितियों, संघर्षों और विडंबनाओं को अत्यंत सहजता तथा प्रामाणिकता के साथ

प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें कृत्रिम आदर्शवाद या काल्पनिक भावुकता का अभाव दिखाई देता है। वे जीवन को उसी रूप में प्रस्तुत करती हैं जैसा वह वास्तव में है। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ पाठकों को समाज की वास्तविक समस्याओं और मानवीय संबंधों की जटिलताओं से गहराई से परिचित कराती हैं।

ममता कालिया ने विशेष रूप से शहरी मध्यवर्गीय जीवन को अपने साहित्य का केंद्र बनाया है। मध्यवर्गीय समाज आर्थिक असुरक्षा, सामाजिक दबाव, पारिवारिक जिम्मेदारियों और आधुनिक जीवन की प्रतिस्पर्धा के बीच निरंतर संघर्ष करता है। उनकी कहानियों और उपन्यासों में नौकरीपेशा लोगों की समस्याएँ, सीमित आय में परिवार चलाने की कठिनाइयाँ, बढ़ती महँगाई, सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने का दबाव तथा पारिवारिक तनाव अत्यंत यथार्थवादी रूप में चित्रित हुए हैं। वे यह स्पष्ट करती हैं कि आधुनिक जीवन की चमक-दमक के पीछे व्यक्ति अनेक मानसिक और आर्थिक संघर्षों से गुजरता है।

उनके साहित्य में स्त्री-पुरुष संबंधों की जटिलताओं का भी अत्यंत सूक्ष्म और यथार्थवादी चित्रण मिलता है। पति-पत्नी संबंधों में उत्पन्न तनाव, संवादहीनता, अपेक्षाएँ, असमानता तथा मानसिक दूरी को उन्होंने गहरी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। उनकी स्त्री पात्र केवल पारिवारिक जिम्मेदारियों तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि वे अपने आत्मसम्मान, स्वतंत्रता और अस्तित्व के प्रश्नों को भी गंभीरता से समझती हैं। इस प्रकार उनके साहित्य में स्त्री केवल भावनात्मक पात्र नहीं, बल्कि विचारशील और संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में सामने आती है।

ममता कालिया की कहानियों और उपन्यासों के पात्र आदर्शवादी न होकर पूर्णतः यथार्थवादी हैं। वे सामान्य जीवन से जुड़े हुए लोग हैं जो परिस्थितियों से संघर्ष करते हैं, असफलताओं का सामना करते हैं और जीवन की कठिनाइयों के बीच अपने अस्तित्व को बनाए रखने का प्रयास करते हैं। उनके पात्रों की समस्याएँ समाज की वास्तविक समस्याएँ हैं, इसलिए पाठक उनके अनुभवों से सहज रूप से जुड़ाव महसूस करता है।

उनकी रचनाओं में स्त्री का संघर्ष केवल बाहरी परिस्थितियों तक सीमित नहीं है, बल्कि मानसिक और भावनात्मक स्तर पर भी दिखाई देता है। आधुनिक स्त्री परिवार, समाज, नौकरी और व्यक्तिगत इच्छाओं के बीच संतुलन स्थापित करने का निरंतर प्रयास करती है। वह एक ओर सामाजिक अपेक्षाओं को निभाती है, वहीं दूसरी ओर अपनी स्वतंत्र पहचान और आत्मसम्मान को भी बनाए रखना चाहती है। यह आंतरिक और बाहरी संघर्ष ही उनके साहित्य को अधिक यथार्थवादी बनाता है।

ममता कालिया ने सामाजिक विसंगतियों, पुरुषवादी मानसिकता, उपभोक्तावादी संस्कृति और बदलते पारिवारिक मूल्यों को भी अपने साहित्य में प्रमुखता से स्थान दिया है। उनकी लेखनी समाज के उन पक्षों को उजागर करती है जिन्हें सामान्यतः अनदेखा कर दिया जाता है। वे छोटे-छोटे अनुभवों और घटनाओं के माध्यम से समाज की बड़ी सच्चाइयों को सामने लाती हैं। यही यथार्थ बोध उनके कथा साहित्य को समकालीन हिंदी साहित्य में विशेष महत्व प्रदान करता है।

V. ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी जीवन की समस्याएँ

ममता कालिया ने अपने कथा साहित्य में नारी जीवन की विविध समस्याओं का अत्यंत यथार्थवादी और संवेदनशील चित्रण किया है। उनके साहित्य में स्त्री केवल एक भावनात्मक पात्र नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और मानसिक संघर्षों से जूझती हुई एक जागरूक व्यक्तित्व के रूप में दिखाई देती है। उन्होंने विशेष रूप से मध्यवर्गीय स्त्री के जीवन को केंद्र में रखते हुए उसकी समस्याओं, असुरक्षाओं और संघर्षों को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनके साहित्य में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि आधुनिक समाज में शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के बावजूद स्त्री को अनेक स्तरों पर संघर्ष करना पड़ता है।

1. आर्थिक संघर्ष

ममता कालिया ने अपने साहित्य में आर्थिक समस्याओं को अत्यंत गंभीरता और यथार्थपरक दृष्टि से प्रस्तुत किया है। मध्यवर्गीय परिवारों में आर्थिक अभाव स्त्री के जीवन को गहराई से प्रभावित करता है। परिवार की सीमित आय, बढ़ती आवश्यकताएँ और सामाजिक अपेक्षाएँ स्त्री पर अतिरिक्त दबाव उत्पन्न करती हैं। उनकी रचनाओं में स्त्री को घर और बाहर दोनों स्तरों पर संघर्ष करते हुए दिखाया गया है। वह एक ओर परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाती है, वहीं दूसरी ओर आर्थिक सहयोग के लिए नौकरी या अन्य कार्य भी करती है।

उनकी कहानियों में कामकाजी स्त्रियों की समस्याएँ विशेष रूप से उभरकर सामने आती हैं। नौकरी और परिवार के बीच संतुलन बनाए रखना उनके लिए अत्यंत कठिन हो जाता है। कार्यस्थल का तनाव, घर की जिम्मेदारियाँ और

सामाजिक अपेक्षाएँ स्त्री को मानसिक रूप से थका देती हैं। आर्थिक स्वतंत्रता स्त्री को आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता प्रदान करती है, किंतु इसके साथ उसे अनेक चुनौतियों और संघर्षों का सामना भी करना पड़ता है। कई बार परिवार और समाज उसकी स्वतंत्रता को सहज रूप से स्वीकार नहीं करते, जिससे उसके भीतर मानसिक द्वंद्व उत्पन्न होता है।

2. दांपत्य जीवन की विडंबनाएँ

ममता कालिया ने पति-पत्नी संबंधों और दांपत्य जीवन की वास्तविक स्थिति का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण किया है। उनके साहित्य में दांपत्य जीवन आदर्श प्रेम और पूर्ण विश्वास का प्रतीक न होकर संघर्ष, असमानता, अपेक्षाओं और मानसिक तनाव से भरा हुआ दिखाई देता है। उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि विवाह संस्था के भीतर भी स्त्री को समानता और सम्मान प्राप्त नहीं होता।

स्त्री के त्याग, श्रम और समर्पण को सामान्य मान लिया जाता है, जबकि उसकी भावनाओं और इच्छाओं को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जाता। पति की अपेक्षाएँ, सामाजिक दबाव और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ स्त्री के व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। कई बार वह अपने आत्मसम्मान और व्यक्तिगत इच्छाओं को दबाकर परिवार की शांति बनाए रखने का प्रयास करती है। ममता कालिया की स्त्रियाँ इन परिस्थितियों को केवल सहन नहीं करतीं, बल्कि वे अपनी अस्मिता और सम्मान के प्रति भी सजग रहती हैं।

3. सामाजिक रूढ़ियाँ और स्त्री

ममता कालिया के साहित्य में सामाजिक रूढ़ियों और पुरुषवादी मानसिकता का भी गहरा चित्रण मिलता है। उन्होंने दिखाया है कि आधुनिक शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता के बावजूद समाज की मानसिकता में पूर्ण परिवर्तन नहीं आया है। आज भी स्त्री को परंपरागत भूमिकाओं तक सीमित करने का प्रयास किया जाता है। उसके निर्णयों, इच्छाओं और स्वतंत्र विचारों को सहज रूप से स्वीकार नहीं किया जाता।

समाज स्त्री से आदर्श पत्नी, आदर्श बहू और आदर्श माँ बनने की अपेक्षा करता है, किंतु उसके व्यक्तिगत सपनों और आकांक्षाओं को अक्सर महत्व नहीं दिया जाता। ममता कालिया की स्त्रियाँ इन सामाजिक रूढ़ियों का विरोध करती हैं और अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करने का प्रयास करती हैं। वे अपने अस्तित्व, आत्मसम्मान और अधिकारों के प्रति जागरूक हैं तथा परिस्थितियों के सामने पूरी तरह झुकने के बजाय संघर्ष का मार्ग अपनाती हैं।

इस प्रकार ममता कालिया का कथा साहित्य नारी जीवन की आर्थिक, सामाजिक और मानसिक समस्याओं का अत्यंत यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत करता है। उनकी रचनाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि स्त्री का संघर्ष केवल बाहरी परिस्थितियों से नहीं, बल्कि समाज की मानसिकता और पारिवारिक संरचना से भी जुड़ा हुआ है। यही कारण है कि उनका साहित्य समकालीन स्त्री जीवन का सशक्त और प्रामाणिक दस्तावेज माना जाता है।

VI. ममता कालिया के उपन्यासों में नारी चेतना

ममता कालिया के उपन्यासों में नारी चेतना अत्यंत प्रभावशाली, यथार्थवादी और जीवन-सापेक्ष रूप में अभिव्यक्त हुई है। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से आधुनिक स्त्री के जीवन-संघर्ष, मानसिक द्वंद्व, सामाजिक असमानताओं और आत्मसम्मान की भावना को गहरी संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है। उनके साहित्य की स्त्रियाँ केवल भावुक पात्र नहीं हैं, बल्कि वे अपने अस्तित्व और स्वतंत्र पहचान के प्रति सजग दिखाई देती हैं। ममता कालिया ने मध्यवर्गीय समाज की स्त्रियों को केंद्र में रखते हुए उनके जीवन की वास्तविक समस्याओं को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनके उपन्यासों में स्त्री परिवार, समाज और स्वयं के बीच संतुलन स्थापित करने का निरंतर प्रयास करती हुई दिखाई देती है।

VII. 'बेघर' में स्त्री की असुरक्षा और संघर्ष

'बेघर' ममता कालिया का अत्यंत महत्वपूर्ण उपन्यास है, जिसमें स्त्री जीवन की असुरक्षा, सामाजिक विसंगतियों और मानसिक संघर्षों का गहरा चित्रण मिलता है। इस उपन्यास की नायिका समाज और परिवार के बीच अपने अस्तित्व तथा सम्मान को बनाए रखने के लिए निरंतर संघर्ष करती है। उपन्यास यह स्पष्ट करता है कि समाज में स्त्री के लिए केवल भौतिक रूप से घर होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे मानसिक और भावनात्मक सुरक्षा की भी आवश्यकता होती है।

इस उपन्यास में स्त्री की भावनात्मक स्थिति, उसके सपनों, इच्छाओं और विवशताओं को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। नायिका अपने जीवन में स्थायित्व, प्रेम और सम्मान की तलाश करती है, किंतु परिस्थितियाँ उसे लगातार संघर्ष करने के लिए बाध्य करती हैं। समाज की पुरुषवादी मानसिकता और पारिवारिक अपेक्षाएँ उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। इसके बावजूद वह पूरी तरह टूटती नहीं,

बल्कि अपने आत्मसम्मान और अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्षरत रहती है। यही संघर्ष उपन्यास में नारी चेतना को सशक्त रूप में स्थापित करता है।

VIII. 'एक पत्नी के नोट्स' में दांपत्य संबंधों का यथार्थ

'एक पत्नी के नोट्स' ममता कालिया का अत्यंत चर्चित उपन्यास है, जिसमें आधुनिक दांपत्य जीवन की जटिलताओं और विडंबनाओं को अत्यंत यथार्थवादी दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास में पत्नी के दृष्टिकोण से वैवाहिक जीवन की समस्याओं, मानसिक तनावों और भावनात्मक संघर्षों को अभिव्यक्ति दी गई है।

लेखिका ने स्त्री के मन में उत्पन्न असंतोष, उपेक्षा, अकेलेपन और आत्मसम्मान की भावना को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। विवाह संस्था के भीतर स्त्री को समानता और सम्मान प्राप्त नहीं होता तथा उसके त्याग और श्रम को सामान्य मान लिया जाता है। पत्नी केवल गृहिणी और परिवार की जिम्मेदारियों तक सीमित होकर नहीं रहना चाहती, बल्कि वह अपनी स्वतंत्र पहचान और व्यक्तित्व को भी बनाए रखना चाहती है।

यह उपन्यास दर्शाता है कि आधुनिक शिक्षित स्त्री अब केवल सहनशीलता और समर्पण की प्रतिमा बनकर नहीं रहना चाहती, बल्कि वह अपने अधिकारों और आत्मसम्मान के प्रति भी सजग है। ममता कालिया ने इस उपन्यास के माध्यम से दांपत्य जीवन के भीतर छिपी असमानताओं और मानसिक संघर्षों को अत्यंत सूक्ष्मता से उजागर किया है।

IX. 'दौड़' में आधुनिक जीवन की त्रासदी

'दौड़' उपन्यास आधुनिक जीवन की भागदौड़, प्रतिस्पर्धा और उपभोक्तावादी संस्कृति की त्रासदी को केंद्र में रखता है। इस उपन्यास में बदलते सामाजिक मूल्यों, संबंधों में बढ़ती दूरी तथा मानसिक तनाव का अत्यंत यथार्थवादी चित्रण मिलता है। आधुनिक जीवन में व्यक्ति सफलता और भौतिक उपलब्धियों की दौड़ में इतना व्यस्त हो जाता है कि मानवीय संबंधों की संवेदनशीलता धीरे-धीरे कम होती जाती है।

उपन्यास की स्त्री पात्र आधुनिक जीवन की चुनौतियों, सामाजिक अपेक्षाओं और मानसिक दबावों से जूझते हुए अपने अस्तित्व को बनाए रखने का प्रयास करती हैं। आधुनिकता ने स्त्री को शिक्षा, रोजगार और स्वतंत्रता के नए अवसर तो प्रदान किए हैं, किंतु इसके साथ ही उसके जीवन में नई समस्याएँ और तनाव भी उत्पन्न हुए हैं। वह घर और नौकरी दोनों की जिम्मेदारियों के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है, जिससे उसके भीतर मानसिक संघर्ष उत्पन्न होता है।

ममता कालिया ने इस उपन्यास में यह स्पष्ट किया है कि आधुनिकता केवल सुविधा और स्वतंत्रता का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति को मानसिक रूप से अकेला और तनावग्रस्त भी बना सकती है। स्त्री पात्र इस बदलते परिवेश में अपनी पहचान और आत्मसम्मान को बनाए रखने के लिए संघर्ष करती हुई दिखाई देती हैं।

इस प्रकार ममता कालिया के उपन्यासों में नारी चेतना अत्यंत सशक्त और यथार्थवादी रूप में अभिव्यक्त हुई है। उनके उपन्यासों की स्त्रियाँ सामाजिक और पारिवारिक परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करने का प्रयास करती हैं। वे आत्मसम्मान, समानता और अस्तित्व के प्रति जागरूक हैं। यही कारण है कि ममता कालिया का उपन्यास साहित्य हिंदी के समकालीन स्त्री विमर्श में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

X. ममता कालिया की कहानियों में स्त्री विमर्श

ममता कालिया की कहानियाँ समकालीन हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श की सशक्त अभिव्यक्ति मानी जाती हैं। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री जीवन के विविध अनुभवों, संघर्षों, संवेदनाओं तथा सामाजिक वास्तविकताओं को अत्यंत सहज और यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियाँ केवल स्त्री की पीड़ा का वर्णन नहीं करतीं, बल्कि उसके आत्मसम्मान, आत्मचेतना और स्वतंत्र अस्तित्व की खोज को भी अभिव्यक्त करती हैं। ममता कालिया ने विशेष रूप से मध्यवर्गीय स्त्री के जीवन को केंद्र में रखते हुए उसकी मानसिक स्थिति, पारिवारिक संघर्ष, आर्थिक दबाव तथा सामाजिक अपेक्षाओं का गहन विश्लेषण किया है।

उनकी कहानियों में घरेलू जीवन, दांपत्य संबंध, सामाजिक संरचना, नौकरीपेशा स्त्रियों की समस्याएँ तथा बदलते पारिवारिक मूल्यों का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। वे समाज की उन विसंगतियों को उजागर करती हैं जिनका सामना स्त्री प्रतिदिन करती है। उनकी कहानियों की विशेषता यह है कि वे अत्यंत साधारण और सामान्य घटनाओं के माध्यम से गहरे सामाजिक सत्य को सामने लाती हैं। छोटी-छोटी घटनाओं, संवादों और पारिवारिक परिस्थितियों के माध्यम से वे स्त्री जीवन की जटिलताओं को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करती हैं।

ममता कालिया की स्त्रियाँ केवल भावुकता और संवेदनशीलता तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि वे

व्यावहारिकता, आत्मविश्वास और संघर्षशीलता का परिचय देती हैं। वे परिस्थितियों के सामने पूरी तरह टूटती नहीं, बल्कि समस्याओं का सामना करने का साहस रखती हैं। उनकी कहानियों की स्त्रियाँ अपनी सीमाओं और विवशताओं को समझते हुए भी अपने आत्मसम्मान और अस्तित्व के प्रति सजग रहती हैं। वे परिवार और समाज के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती हैं, किंतु अपनी स्वतंत्र पहचान को समाप्त नहीं होने देतीं।

उनकी कहानियों में स्त्री विमर्श आक्रोशपूर्ण या केवल विद्रोह तक सीमित नहीं है, बल्कि वह अत्यंत संतुलित, संवेदनशील और यथार्थपरक है। ममता कालिया स्त्री की समस्याओं को केवल व्यक्तिगत स्तर पर नहीं देखतीं, बल्कि उन्हें समाज की व्यापक संरचना और पुरुषवादी मानसिकता से जोड़कर प्रस्तुत करती हैं। वे यह स्पष्ट करती हैं कि स्त्री की समस्याएँ केवल घरेलू नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों से भी गहराई से जुड़ी हुई हैं।

ममता कालिया ने अपनी कहानियों में आधुनिक शिक्षित स्त्री की मानसिक स्थिति का भी सूक्ष्म चित्रण किया है। आधुनिकता और शिक्षा ने स्त्री को नई चेतना और आत्मनिर्भरता तो प्रदान की है, किंतु इसके साथ उसके जीवन में नए प्रकार के तनाव और संघर्ष भी उत्पन्न हुए हैं। नौकरी, परिवार, बच्चों की जिम्मेदारियाँ और सामाजिक अपेक्षाएँ स्त्री के जीवन को जटिल बना देती हैं। उनकी कहानियाँ यह दर्शाती हैं कि आधुनिक स्त्री अपने जीवन में स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की खोज करते हुए निरंतर संघर्षरत है।

उनकी लेखन शैली भी स्त्री विमर्श को प्रभावशाली बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सरल, सहज और संवादप्रधान भाषा के माध्यम से वे अपने पात्रों की मानसिक स्थिति और सामाजिक यथार्थ को अत्यंत जीवंत बना देती हैं। उनकी कहानियों में व्यंग्य का प्रयोग भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वे सामाजिक पाखंड, पुरुषवादी सोच और पारिवारिक असमानताओं पर सूक्ष्म व्यंग्य करती हैं, जिससे उनकी रचनाएँ अधिक प्रभावशाली बन जाती हैं।

इस प्रकार ममता कालिया की कहानियाँ हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श को नई दिशा प्रदान करती हैं। उन्होंने स्त्री जीवन की समस्याओं, संघर्षों और आकांक्षाओं को अत्यंत यथार्थवादी और संवेदनशील दृष्टि से प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियाँ न केवल स्त्री जीवन का दस्तावेज हैं, बल्कि वे समकालीन समाज की मानसिकता और सामाजिक संरचना का भी गहरा विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं। यही कारण है कि ममता कालिया की कहानियाँ हिंदी कथा साहित्य में विशेष महत्व रखती हैं।

XI. भाषा और शैली की विशेषताएँ

ममता कालिया की भाषा और शैली हिंदी कथा साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान रखती है। उनकी लेखन शैली अत्यंत सहज, सरल, संवादात्मक तथा जीवन के निकट प्रतीत होती है। उन्होंने साहित्यिक भाषा के कृत्रिम आडंबर और जटिल अभिव्यक्तियों से बचते हुए सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रभावशाली प्रयोग किया है। यही कारण है कि उनका साहित्य पाठकों से सीधे जुड़ जाता है और उनकी रचनाएँ अत्यंत स्वाभाविक तथा प्रामाणिक प्रतीत होती हैं। उनकी भाषा में न तो अनावश्यक अलंकारिकता दिखाई देती है और न ही बनावटी गंभीरता, बल्कि उसमें जीवन की वास्तविकता और अनुभवों की सजीवता स्पष्ट रूप से झलकती है।

ममता कालिया की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता उसकी संप्रेषणीयता है। वे जटिल सामाजिक और मानसिक परिस्थितियों को भी अत्यंत सरल शब्दों में अभिव्यक्त करने की क्षमता रखती हैं। उनके संवाद पात्रों के स्वभाव, मानसिक स्थिति और सामाजिक परिवेश को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं। संवादों की स्वाभाविकता उनके कथा साहित्य को जीवंत बना देती है। पाठक को ऐसा अनुभव होता है मानो वह अपने आसपास के लोगों और परिस्थितियों को देख रहा हो।

उनकी शैली में व्यंग्य का विशेष महत्व है। ममता कालिया ने सामाजिक विसंगतियों, पारिवारिक पाखंडों, पुरुषवादी मानसिकता तथा मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाओं पर अत्यंत सूक्ष्म और प्रभावशाली व्यंग्य किया है। उनका व्यंग्य केवल हास्य उत्पन्न करने के लिए नहीं होता, बल्कि वह समाज की वास्तविकताओं को उजागर करने का सशक्त माध्यम बन जाता है। वे छोटे-छोटे प्रसंगों और सामान्य घटनाओं के माध्यम से समाज की बड़ी समस्याओं पर तीखा प्रहार करती हैं।

ममता कालिया की भाषा में संवेदनशीलता और भावात्मक गहराई भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उन्होंने स्त्री जीवन की छोटी-छोटी घटनाओं, मानसिक द्वंद्वों, भावनात्मक संघर्षों और पारिवारिक संबंधों को अत्यंत सूक्ष्मता और मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है। उनकी लेखनी में भावुकता का अतिरेक नहीं है, बल्कि नियंत्रित संवेदना और यथार्थ का संतुलित समन्वय दिखाई देता है। यही कारण है कि उनकी रचनाएँ पाठकों को भावनात्मक रूप से प्रभावित करती हैं।

उनकी कथात्मक शैली का एक महत्वपूर्ण पक्ष उसकी यथार्थपरकता है। वे जीवन के वास्तविक अनुभवों को बिना किसी कृत्रिमता के प्रस्तुत करती हैं। उनके पात्र सामान्य

जीवन से जुड़े हुए होते हैं और उनकी समस्याएँ भी समाज की वास्तविक समस्याएँ होती हैं। ममता कालिया ने विशेष रूप से मध्यवर्गीय स्त्री के जीवन को अत्यंत प्रामाणिकता के साथ चित्रित किया है। उनकी रचनाओं में घर-परिवार, नौकरी, आर्थिक संघर्ष, दांपत्य संबंध तथा सामाजिक अपेक्षाओं का यथार्थवादी चित्रण मिलता है।

उनकी शैली में आत्मकथात्मकता और अनुभवजन्य यथार्थ का भी प्रभाव दिखाई देता है। वे अपने आसपास के जीवन, परिवेश और सामाजिक स्थितियों को गहराई से देखकर उन्हें कथा का रूप प्रदान करती हैं। इसी कारण उनकी रचनाओं में कृत्रिमता नहीं, बल्कि अनुभवों की सच्चाई और जीवन की प्रामाणिकता दिखाई देती है।

ममता कालिया की भाषा और शैली आधुनिक हिंदी कथा साहित्य को नई दिशा प्रदान करती है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि साहित्य की प्रभावशीलता जटिल भाषा में नहीं, बल्कि सहज अभिव्यक्ति और वास्तविक अनुभवों की सच्चाई में निहित होती है। उनकी रचनाएँ भाषा की सरलता, व्यंग्यात्मक दृष्टि, संवेदनशीलता और यथार्थपरक शैली के कारण हिंदी साहित्य में विशेष स्थान रखती हैं।

XII. ममता कालिया और समकालीन महिला लेखन

समकालीन हिंदी महिला लेखन में ममता कालिया का अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट स्थान है। उन्होंने हिंदी कथा साहित्य को नई दृष्टि प्रदान करते हुए स्त्री जीवन की वास्तविक समस्याओं, संघर्षों और सामाजिक स्थितियों को अत्यंत यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया। ममता कालिया ने स्त्री विमर्श को केवल सैद्धांतिक या वैचारिक स्तर तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे दैनिक जीवन के व्यावहारिक अनुभवों और सामाजिक यथार्थ से जोड़कर देखा। यही कारण है कि उनका साहित्य पाठकों के जीवन और समाज के अधिक निकट प्रतीत होता है।

समकालीन हिंदी महिला लेखन में उनकी तुलना मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियंवदा तथा मृदुला गर्ग जैसी प्रमुख साहित्यकारों से की जाती है। इन लेखिकाओं ने हिंदी साहित्य में स्त्री चेतना को नई दिशा प्रदान की, किंतु ममता कालिया की विशेषता यह है कि उन्होंने मध्यवर्गीय स्त्री के दैनिक जीवन, आर्थिक संघर्षों, पारिवारिक तनावों और सामाजिक विसंगतियों को विशेष रूप से अपने साहित्य का केंद्र बनाया। जहाँ कुछ महिला लेखिकाओं ने स्त्री की भावनात्मक पीड़ा, संवेदनाओं और मानसिक द्वंद्वों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया, वहीं ममता कालिया ने स्त्री के व्यावहारिक जीवन-संघर्षों, आर्थिक समस्याओं, नौकरी और परिवार के बीच संतुलन तथा सामाजिक असमानताओं को प्रमुखता दी। उनका साहित्य आधुनिक मध्यवर्गीय स्त्री की वास्तविक स्थिति का प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत करता है। उनकी स्त्रियाँ केवल संवेदनशील नहीं, बल्कि जागरूक, आत्मनिर्भर और संघर्षशील भी हैं।

ममता कालिया की रचनाओं में स्त्री समाज की रूढ़ियों, पुरुषवादी मानसिकता और परंपरागत सीमाओं को चुनौती देती हुई दिखाई देती है। वह अपने आत्मसम्मान, स्वतंत्रता और अस्तित्व के प्रति सजग है तथा अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करने का निरंतर प्रयास करती है। उनकी स्त्रियाँ परिस्थितियों से समझौता तो करती हैं, किंतु अपने व्यक्तित्व और अस्मिता को समाप्त नहीं होने देतीं।

इस प्रकार ममता कालिया का साहित्य समकालीन हिंदी महिला लेखन में विशेष महत्व रखता है। उन्होंने स्त्री विमर्श को जीवन के वास्तविक अनुभवों से जोड़कर उसे अधिक व्यापक, प्रासंगिक और प्रभावशाली बनाया। उनका साहित्य आधुनिक समाज में स्त्री की बदलती स्थिति, उसके संघर्षों और उसकी चेतना का सशक्त दस्तावेज है।

XIII. निष्कर्ष

ममता कालिया का कथा साहित्य हिंदी साहित्य में नारी चेतना, सामाजिक यथार्थ और मध्यवर्गीय जीवन के संघर्षों का अत्यंत महत्वपूर्ण दस्तावेज माना जाता है। उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से स्त्री जीवन की विविध समस्याओं, उसकी आकांक्षाओं, मानसिक संघर्षों, सामाजिक असमानताओं तथा आत्मसम्मान की भावना को अत्यंत प्रभावशाली और यथार्थवादी ढंग से अभिव्यक्त किया है। उनका साहित्य केवल कल्पनात्मक संसार का निर्माण नहीं करता, बल्कि समकालीन समाज की वास्तविक परिस्थितियों और मानवीय संबंधों की जटिलताओं को गहराई से प्रस्तुत करता है।

ममता कालिया की रचनाओं में स्त्री केवल संवेदनशील और भावुक पात्र के रूप में नहीं दिखाई देती, बल्कि वह एक जागरूक, आत्मनिर्भर और संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में सामने आती है। उनकी स्त्रियाँ जीवन की कठिन परिस्थितियों, पारिवारिक दबावों, आर्थिक समस्याओं तथा सामाजिक रूढ़ियों के बीच अपने अस्तित्व और आत्मसम्मान को बनाए रखने का प्रयास करती हैं। वे परिस्थितियों के सामने पूरी तरह टूटती नहीं, बल्कि संघर्ष करते हुए अपनी स्वतंत्र पहचान स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ती हैं।

ममता कालिया ने विशेष रूप से मध्यवर्गीय समाज की स्त्री को अपने साहित्य का केंद्र बनाया है। उन्होंने आधुनिक जीवन की विडंबनाओं, दांपत्य संबंधों की जटिलताओं, नौकरीपेशा स्त्रियों की समस्याओं, आर्थिक असुरक्षा तथा बदलते सामाजिक मूल्यों का अत्यंत सूक्ष्म और यथार्थवादी चित्रण किया है। उनके साहित्य में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि आधुनिकता और शिक्षा ने स्त्री को नई चेतना और स्वतंत्रता तो प्रदान की है, किंतु उसके साथ अनेक नई चुनौतियाँ और मानसिक तनाव भी उत्पन्न हुए हैं।
उनका साहित्य यह स्पष्ट करता है कि नारी चेतना केवल विद्रोह या पुरुष-विरोध तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता, स्वतंत्र अस्तित्व और व्यक्तित्व की पहचान से जुड़ी हुई व्यापक अवधारणा है। ममता कालिया ने स्त्री को समाज की परंपरागत सीमाओं से बाहर निकालकर उसे एक स्वतंत्र सोच रखने वाले व्यक्ति के रूप में स्थापित किया। उनकी स्त्रियाँ अपने अधिकारों और सम्मान के प्रति सजग हैं तथा सामाजिक रूढ़ियों और पुरुषवादी मानसिकता को चुनौती देने का साहस रखती हैं।
ममता कालिया की भाषा और शैली भी उनके साहित्य को विशेष प्रभावशाली बनाती है। सहज, सरल और संवादात्मक भाषा के माध्यम से उन्होंने जीवन की वास्तविकताओं को अत्यंत प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाओं में व्यंग्य, संवेदना और यथार्थ का संतुलित समन्वय दिखाई देता है, जो पाठकों को समाज और स्त्री जीवन की गहरी सच्चाइयों से परिचित कराता है।
इस प्रकार कहा जा सकता है कि ममता कालिया का कथा साहित्य नारी चेतना और सामाजिक यथार्थ के संगम का सशक्त उदाहरण है। उनका साहित्य समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श को नई दिशा प्रदान करता है तथा आधुनिक समाज में स्त्री की बदलती स्थिति को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम बनता है। उनकी रचनाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं, क्योंकि वे स्त्री जीवन के उन प्रश्नों को उठाती हैं जो वर्तमान समाज में भी व्यापक रूप से विद्यमान हैं। इसलिए ममता कालिया का साहित्य हिंदी कथा साहित्य की अमूल्य धरोहर के रूप में सदैव महत्वपूर्ण बना रहेगा।

संदर्भ सूची

[1] ममता कालिया. बेघर. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2002. प्रिंट।

[2] ममता कालिया. एक पत्नी के नोट्स. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2004. प्रिंट।

[3] ममता कालिया. दौड़. नई दिल्ली: भारतीय ज्ञानपीठ, 2005. प्रिंट।

[4] ममता कालिया. नरक दर नरक. नई दिल्ली: लोकभारती प्रकाशन, 1998. प्रिंट।

[5] ममता कालिया. लड़कियाँ. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2001. प्रिंट।

[6] डॉ. नगेंद्र. हिंदी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2010. प्रिंट।

[7] रामविलास शर्मा. साहित्य और समाज. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, 2008. प्रिंट।

[8] मन्नू भंडारी. हिंदी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन, 2007. प्रिंट।

[9] डॉ. सुधा सिंह. समकालीन हिंदी महिला लेखन. इलाहाबाद: साहित्य भंडार, 2012. प्रिंट।

[10] डॉ. उषा यादव. हिंदी उपन्यासों में नारी चेतना. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन, 2011. प्रिंट।

[11] डॉ. विमला शर्मा. आधुनिक हिंदी कथा साहित्य का अध्ययन. जयपुर: पंचशील प्रकाशन, 2013. प्रिंट।

[12] विभिन्न शोध पत्र, साहित्यिक पत्रिकाएँ एवं आलोचनात्मक आलेख। प्रिंट।